नुकती दाणां

गोविन्द अग्रवाल

अंग्रेजी भाषांतर
द्वारकाप्रसाद लसोटिया

लोक संस्कृति शोध संस्थान
नगर-श्री
चूरू (राजस्थान)

प्रकाशक
सुबोधकुमार अग्रवाल
मंत्री, लोक संस्कृति शोध संस्थान
नगर-श्री, चूरू

प्रथम संस्करण
सन् १९७८ ई०

मूल्य—दस रुपये

मुद्रक
नेशनल आर्ट प्रेस
कुचीलपुरा, बीकानेर

माँ-बापू की याद में

धरौंमान

नुक्ती दाणां

'नुक्ती दाणा' बहुत अच्छा लगा—वसा ही रसमय, सुभावना और सुस्वादु जसा राजस्थान म नुक्ती दाना होता है। इसमें गहराई और गम्भीरता है जीवन की विविध सगतियो की सूक्ति, सुभाषित या लघु कथन क द्वारा बडी ही मार्मिक और प्रभविष्णु भाषा म अभि यक्ति हुई है। बहुत पहले खलील जिब्रान की लघु कथाओ ने भी यही किया था। साहित्य जीवन का ही एक अंग है। साहित्य सजना जीवन की अ तरग और बाह्य प्रक्रिया से सबद्ध होकर ही क्षमता साथकता और दक्ता प्राप्त करती है। जीवन से तटस्थ रहकर साहित्य वायवी काल्पनिक और खडित हो जाता है। श्री अग्रवाल का नुक्ती दाणा' जीवन को छूता ही नही उसे आत्मसात करके चलता है। उनकी अनुभूति ही अभिव्यक्ति बन गई है। दोना म कही कोई व्यतिरेक या अ तराल नही। भाव और चि तन का सुखद सामजस्य इस कृति म हुआ है।

प्रो कल्याणमल लोढा
अध्यक्ष हि दी विभाग
कलकत्ता विश्वविद्यालय

२ ए, देशप्रिय पाक ईस्ट
२८ जनवरी १६७८

नुक्ती दाणा' लेखक की सुललित एव प्राजल राजस्थानी मे लिखित मौलिक उक्तिया व सूक्तिया का एक अनूठा सकलन है। इनकी मौलिकता सवदनगत कथ्य म ही नही उसकी अभि यक्ति म भी है जिसके फल स्वरूप लेखक की इन जीवन विषयक टिप्पणिया (Observations of life) मे विचार एव अनुभूति, कथ्य एव कथन का एक मणि कांचन सयोग घटित हो गया है। नुक्ती–दाणा से राजस्थानी प्रेमिया की न केवल रसना ही अपितु मानस भी तप्त होगा इसमे स देह नही।

डा॰ शमुसिह
राजस्थान विश्व विद्यालय

जयपुर
२३–१२–७७

दो आखर

'नुक्ती दाणा रो आपरो अपणो सुवाद' है। यां री चासणी री विधि लेखक री आपरी recipe है। एक नीं, बोळी सारी वारा मन री उपज है जो साहित्य रा खेल मायने नवी है।

रात रा अंधारा म आकासगगा, नै मां जाया भाया रा घर रा आगणा बीचोबच बँटवाडा री घालियोडी भीत एक नुवो ईंज नमूनो है। भीत रा अतस मायनू पीडा री सूळां चुभती कवि ने दीखरी है।

इण पोथी मायने रात री रळियावण रा, तारा छाई रात रा, चाद अर चादणी, आभे रा फाटा काळजा री आकासगगा री रपकूगरी रा न्यारी न्यारी सोरभ अर सुवाद रा घणा सारा दाणा है।

म्हू जाणु, इण कुदरत रा कारखाना रा रूप-रग री वात विगत दणी नरखणो परखणो श्री गोविंदजी सारू सुभाविक हो। राजस्थान रा मारवाड रा मानवी न रात रा रूप री तारा री तरछाया री छब जोवा न मिल वा दुनिया री दूजी जायगा रा मानवियां न अबखीज मिल। म्हू देस परदेस जावू जद याद राख रात री वेळा आभा साम्ही जोवू। म्हन रात रो वो अजब गजब रो रूप कठई दखण न कोनी मिल्यो जो मारवाड री तारा छाई रातडलिया मे देख्यो। कठई मगसो आभो कठई फीको, कठई उदास, कठ कारखाना रा धूवा धपाटा सू काळस भरियाडो तो कठई निरमळ आभो।

स्कडेनविया रा मुलका में आधी रात रो सूरज देखवान लोग जावे। म्हन ई वा देसा म जावा रो औसर मिलग्यो। एक पसवाडे चाद अर दूजे पसवाडे सूरज चमकतो देख्यो, सूरज अर चाद दोनू एकसा। पूछणो पड्यो—या मायने चाद कस्यो अर सूरज कस्यो। उगाणै आथूणे धरावु

लकावु जठ गी वठै ई आभो जोया पण मारवाड वाळी अखरा-नखरा वाळी रात कठई नी दीसीजी नी दीसी।

चवडका ई कठे कठे घणा चोखा मारया है, मारया तो हळवा हाथ सू पण ऊंडी मार करण्या। 'दाखां री बे'ला री जद्दा मायने लोही दिगीज जा अमीरा रो खाज है, लोही पीवती ही व्हला।' भगवान आपरी घणी व्हाली परवाळी लिछमीनी न ई कजूस री रखवाळी म छोड नचीता "हे जाव'। एडा घणा क फूटरा नमूना है।

भासा री निजर सू आपरी महत्ता है। घणाखरा कवे राजस्थानी मायने गरी ठाडी अर सताली बात कणी दोरी है। अ थोडा क दाणा ई उणा री तरफ न तोडवा छर्रा का दाणा है। अगरेजी अर हिन्दी माय उलथो करवा सू चोखो हियो। राजस्थानी नी जाणवा वाळा कनई दाणा दाणा कर इण भासा रे जीवत व्हेवा रा समीचार पूग जासी।

४ रकाबगज रोड
नई दिल्ली

लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत
सदस्य, राज्य सभा

INTRODUCTION

No apology is needed for a short intervention in between the charm of the originating mind and the reciprocality of the receiving interests I must confess at the very outset that I chanced to enjoy this significant and equally charming little book through the courtesy of my esteemed friend Shri H P Sarawgi for want of whose contagious enthusiasm I would have been deprived of the pleasure of this creative thinking It so charmed me that I was tempted to offer a few words by way of an introductory remark, and it hardly necessitates any defence on my part This chance meeting with a highly impressive mind testified to its intrinsic values and I am introducing this 'Nukati Danen with the greatest of pleasure

The 'Nukati Danen' is unique in respects more than one, and in all reality are chips from the anvil of a unique mind in its own rights I found these Danen more illuminating and absorbing than what I had expected of them

The Danen' possess a charming quality of self realization which is their own and no one, I am sure, can miss their

mind symbolises itself into the 'Nukati Danen of Shri Govind Agrawal and this symbolization is free from all vagaries of mystification It is the realisation of refreshingly reflective mind and can be likened to the Swasamvedyajnan or intuitive self realization of Sahajyani Saints if I am allowed the liberty to employ this term of reference

It is not a book to decorate our shelves with but a true companion to keep constant company with I cannot fail to perceive the futility of an introduction for this mine of gems as this cannot fail to attract the attention of discerning minds by its brilliance and illuminating charm I thank the author for this charming book of lasting beauty

Meenakshi
Ranchi
16 1 78

Dr Ram Khelawan Pandey
M A , D Litt

आमुख

"माटी के नाहैं स दीवै की आ खिमता है क वो अधार न आपकै हेट दाब कर राख' इस आधे दाने में ही जसे इस छोटी सी किन्तु अमूल्य कृति का मम ही कह दिया हो। दीपक जैस अंधेरे को दाब रखने की क्षमता रखता है छोटा होने हुए भी उसकी यह क्षमता जिस तरह श्लाघ्य है, उसी तरह नुक्ती दाणां के प्रत्येक दाने मे कुछ विशिष्ट क्षमता है–क्षमता ही नहीं क्षमताएं हैं। यह इस नुकती के दाना से ही सिद्ध है। प्रत्येक दाना माधुय म पगा हुआ है क्योंकि प्रत्यक दान में कवित्व और काव्य रस का आन द मिलता है। प्रत्येक दाना एक काव्योक्ति है साथ ही एक सूक्ति भी है। प्रत्यक सूक्ति किसी न किसी नैतिक सत्य को गर्भित किए हुए है।

इसम अग्रवालजी न जीवन और प्रकृति विषयक अपनी गम्भीर अनुभूतियो को वाक्य म निबद्ध कर दिया है उन्हे अनुभव और अनुभूतियो के रत्नों से जड दिया है। यही कारण है कि मधुरिमा युक्त ये दाने जगमगा भी रहे हैं।

आज क भ्रिष्टाचारी मिनख स्यू तो अडवो चोखो —अडवा से अभिप्राय 'खेत का धोखा' से है। कितना साथक कथन है। इसी के साथ इस उक्ति की चोट दखिये—

"सूरज अर तारां की अपेच्छा चाद ई धरती क मिनख के घणो नेडो रव, ई खातर वीक अतस मे काळूस होवै तो के बडी बात है।"

ऐसा चुटियल और मार्मिक उक्तिया इस पुस्तक म भरी पडी हैं। प्रत्येक उक्ति हमारे मन को ही मोहित नहीं करती, बुद्धि को भी जगा देती है। हम इन नुक्ती के दाना के स्वाद स अभिभूत होकर मानव और उसकी मानवता के स्वरूप के चितन म प्रवत्त हो जात हैं। एक उक्ति है—

मिनख ज्यू-ज्यू आपणा निजर स्यू परै होवतो जावै, त्यू-त्यू छोटो लखावतो जाव, पण ज्यू-ज्यू वो औगणा स्यू दूर होवतो बगै त्यू-त्यू बडो बणतो जावै।"

जितना दुगु णा स दूर होता जाता है मनुष्य उतना ही महान बनता जाता है इस एक ग्रभिनन्दनीय सत्य की ग्रभिव्यजना इसमें हुई है यह गुण ग्रौर ग्रवगुण' के तत्वा पर विचार करने क लिए हम विवग करती है।

इन नुकती क दानो म यद्यपि कही मात्र प्रकृति के दृश्यों को गू था गया है, जसे—

ग्राभो इत्तो लांबो चोडो क बीको कोई छेह कोनी पण मूम इस्यो क वो ग्राज ताई एक भी पखेरू न घुरसाळो घालण न एक बिलांद ठोड कोनी दई। बिच्यारा पछी रोजीना दिन की उगाळी बीक दुवार जाव भर ग्राथण वेळा चू चाट करता रीता ही पाछा ग्रा जाव।'

इसमें केवल पक्षी ग्रौर ग्राकाश की चर्चा की गई है ग्रथवा उदा हरणार्थ यह दाना लें—

'बसत रितु म म्हाने बिरछां स्यू ग्रळगा होवणा पडसी इ सोच सोच म इ बिरछां का पत्ता पीळा पडै लाग्या। इसम वसत ग्रौर पादप-पत्र ही चर्चा का विषय बने हैं। इस प्रकार के प्राकृतिक चित्रण जहाँ मार्मिक हैं ग्रौर ग्रालकारिकता से ग्रौर भी ग्रधिक प्रभविष्णु हो गये हैं वही उनम बौद्धिक चितन को उद्वेलित करने की भी क्षमता ग्रा गई है किन्तु साथ ही किसी न किसी नतिक सत्य का पुट उनम ग्रवश्य है। कारण यह है कि सभी नुकती के दाने मनुष्य को दृष्टि म रखकर रचे गय हैं ग्रौर यहा परोस गय है।

इन दानो स हमारा ध्यान इस बात की ग्रोर भी जाता है कि इन दानो को सजोन वाले व्यक्ति की दृष्टि मनुष्य के कलुष ग्रौर कुटिलता की ग्रोर विशेष रही है। पर इसे ग्रापत्तिजनक नहो माना जा सकता है क्योंकि इसी विधि स तो यह जाना जा सकता है कि हम जो मनुष्य हैं उनमे क्या विकृतिया है। लेखक मनुष्य को किसी महात्मा या उपदेशक की भाति

उनका ध्यान नही दिलाता वस्तुत ये दाने इसी लिए नुक्ती के दाने हैं कि इनमे मनुष्य के आत्मनिरीक्षण का भाव प्रधान है, तभी तो इनमे आत्मक मधुरता मिलती है पर दोषान्वेषी कटुता नही मिलती।

प्रत्यक दाना विलक्षण है नावक के तीर की तरह बेधनेवाला भी है प्राकृतिक सौन्दर्य की तरह मोहक और मधुर है मीठी कुनैन की तरह उपयोगी है, अद्भुत वाक्वदग्ध्य से युक्त है शिल्प से जैसे काव्य ही है अत आदि से अन्त तक पठनीय हैं। मननीय भी हैं। सूक्ति की तरह नभोन्मेषक भी लगते हैं।

फिर लेखक ने इन तीन भाषाओं म प्रस्तुत करके इसकी उपयोगिता और बढ़ादी है। मूलत उसने ये नुक्ती दाने राजस्थानी म लिखे और 'मरु श्री नामक पत्रिका म क्रमश प्रकाशित कराये। हिन्दी रूपान्तर *उन्होंने स्वय किया है। अंग्रेजी भाषा मे इनका अनुवाद उनके किसी अग्रेजी-दां* विद्वान् मित्र से कराया है। प्रत्येक दाने के तीनो ही रूप अच्छे बन पड़े हैं।

इस कृति के लिए मैं इसके लेखक श्री गोविन्द अग्रवाल को बधाई देना चाहता हू। लोक सस्कृति म उनकी गहरी रुचि है और उस क्षेत्र मे उनका योगदान अत्यत श्लाघ्य रहा है साथ ही उनकी अभिरुचि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से भी जुडी हुई है। अभी चूरू क्षेत्र के इतिहास लेखन के लिए विद्वानो द्वारा ये प्रशसित हुए हैं। इसम कोई सदेह नही कि ये लोक साहित्य-सस्कृति-इतिहास क प्रामाणिक विद्वान और लेखक हैं। ये नुक्ती-दाने अवश्य ही पाठको को प्रिय लगेंगे और वे इनसे लाभान्वित होंगे।

मैं सन् १९७८ के नव वर्ष के प्रथम दिन इसी शुभ कामना के साथ यह भूमिका समाप्त करता हू।

तिलक नगर, जयपुर
१ १ १९७८

सत्येन्द्र
पी एच डी, डी लिट्

उपक्रम

मैं शुरू से ही बडा भावुक था और मिट्टी से बनी गनगौर' को जल म विसर्जित करने के पश्चात् बालिकाओ द्वारा उसके विछोह म गाये जाने वाले गीत की पत्तिया को सुन सकना भी मेरे बूते की बात न थी। उन पंक्तियो मे व्यक्त बालिकाओ के मन की कसक का अहसास कर मैं उदास हो जाया करता।

मेरे अग्रज श्री सुबोधकुमारजी पर्याप्त पहले से ही विविध विधाओ मे लिखते आ रहे थे। उनके राजस्थानी विरह-काव्य लोर' को बडी लोकप्रियता मिली थी। गद्य काव्य भी वे लिखते थ जिनका एक लघु सकलन कुछ समय पश्चात् कतरन' नाम से प्रकाशित हुआ था और विद्वानो ने इसकी बडी सराहना की थी।

उन्ही के सान्निध्य म सन् १६४२ ई म अतुकान्त कविताओ और गद्य काव्यो से मेरे लेखन का प्रारभ हुआ। हृदय मे विचारों का एक अजस्र स्रोत पूरे वेग से फूट चला। मन-मस्तिष्क मे न जाने कौन से सवदनशील तत्व सक्रिय हो उठ कि जड और चेतन के सूक्ष्मातिसूक्ष्म व्यापार की अनुभूतिया मन प्राण को होने लगी। जीव और प्रकृति की हर धडकन हर थिरकन के साथ नवीन उद्भावनाओ का सृजन होता रहता। खाते-पीते सोते-जागते नये-नये विचार कौधते रहते और मैं रात दिन उन्ही मे डूबा रहता। तन से कहीं और होता, लेकिन मन स कही और।

अपनी उद्भावनाओ को, अपनी अनुभूतियो को ज्यों की त्यो कागज पर उतार लेने की क्षमता मुझ म न थी। मैं अपने पास कोई दनिकी भी नही रखता था फिर भी किंचित् अवकाश मिलते ही जो भी कागज का टुकडा सुलभ होता उसी पर अपने विचारों को टूटे-फूटे शब्दो म नोंच लेता। कई बार तो रात्रि म शय्या से उठकर दीवार पर ही टीप लिया करता। यह क्रम सन् ५३ ई तक पूरे वेग के साथ चलता रहा और मन प्राण की अनुभूतियो को गद्य काव्यो के रूप मे सजोने का प्रयत्न करता रहा।

गद्य काव्यो की सख्या कई हजार हो गई थी जो छोटी बडी पुंजियो पर लिखे गठरिया मे बधे पडे थे। निधन की थाती की तरह मैं इन्हें खूब सहेज कर रखता था और कजूस के धन की तरह किसी को दिखलाता भी नही था। लेकिन परिस्थितिया इतनी विषम थी कि इनके प्रकाशन की बात तो सोच भी नही सकता था। तब मुझे लगा कि इस प्रकार लिख लिख कर पोटलियां जमा करने की अपेक्षा तो न लिखना ही श्रेयस्कर है। अतएव मैंने अपने मन मस्तिष्क पर अकुश लगाया। फिर भी थोडा-बहुत सृजन तो चलता ही रहा और यदा-कदा अब भी लिख लेता हू।

वर्ष पर वर्ष बीतते गये। इस बीच पत्र पत्रिकाओ मे तो खूब लिखता रहा और कतिपय पुस्तकें भी प्रकाशित हुई। लेकिन इन गद्य-काव्यो के प्रकाशन की बारी नही आई। तब इस सस्था की ओर से प्रकाशित होने वाली त्रै-मासिकी 'मरु श्री' मे इन्हें थोडे-थोडे करके निकालने का विचार मन में आया और गद्य-काव्यो की पुंजियो वाली गठरियों को टटोला। चूकि अधिकतर गद्य काव्य प्राय बीस और तीस वर्ष की अवस्था में लिखे गये थे अत मौलिक उद्भावनाओ के होते हुए भी अनेक गद्य-काव्यो में यौवन और शृगार की प्रतिच्छाया थी भले ही वह पुरुष से सबधित हो भले ही प्रकृति से। ये सभी गद्य काव्य कभी बडी उमंग से लिखे थे लेकिन अब जब कि पचास को पार कर चुका तो इन सब को प्रकाशित करने का साहस नहीं जुटा पाया और ऐसे गद्य-काव्यो वाली पुंजियों को वे मन से फाडता चला गया।

मरु श्री' मार्च १६७४ के अङ्क से य गद्य-काव्य राजस्थानी मे नुवती दाणों के रूप म धारा प्रवाह निकलने प्रारंभ हुए जो पाठको को खूब रुचे। एक कवि मित्र ने तो एक दाने का अपहरण व अगम्रग कर उसे अपने काव्य-सग्रह में स्थान देने की भी कृपा कर डाली। अनेक पाठको ने इन्हें पुस्तक रूप म निकालने का आग्रह किया लेकिन सस्था के पास वसे साधन नहीं थे। भाई दुर्गादत्त गोस्वामी का पत्र मिलने पर मैं दिनाक १५ जुलाई, ७७ ई को दिल्ली गया। वहाँ राजस्थान सूचना केन्द्र मे एक

साहित्य-समारोह का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता राजस्थानी की सुविख्यात लेखिका श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत (सदस्य, राज्य सभा) ने की और उन्होंने इन पंक्तियों के लेखक को ग्यारह सौ रुपए की राशि भी पुरस्कार स्वरूप भेंट की। इससे प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन का एक आधार बन पाया।

राजस्थानी में प्रकाशित इन नुक्तो दानो का आस्वादन अधिकाधिक पाठक कर सकें इस दृष्टि से मैंने राष्ट्रभाषा हिन्दी में भी इनका भावानुवाद कर दिया। अंग्रेजी भाषान्तर श्री द्वारकाप्रसादजी लखोटिया ने किया है। राजस्थानी अंग्रेजी और हिन्दी में मुखबन्ध लिखने के लिए मैं श्रीमती लक्ष्मीकुमारी जी चूण्डावत, डा० राम खेलावनजी पाण्डेय एवं डा सत्येन्द्रजी का अत्यंत अनुग्रहीत हूं। पुस्तक पर अपनी अमूल्य सम्मतियाँ प्रेषित करने वाले विद्वानों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूं। 'मरु श्री' के सुधी पाठक भी समय समय पर स्नेह सिक्त सम्मतियां भिजवाते रहे हैं, यद्यपि स्थानाभाव के कारण उन्हें यहाँ प्रकाशित नहीं किया जा सका है तथापि उन सबके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूं। बन्धुवर श्री हनुमान प्रसाद सरावगी श्री शारदाप्रसाद राय एवं श्री मदनसिंह सामोर से प्राप्त सहयोग के लिए उनका आभारी हूँ। पुस्तक के प्रकाशन का श्रेय तो मेरे अग्रज श्री सुबोधकुमार जी अग्रवाल को ही है जो इस संस्था के मंत्री भी हैं।

नुक्ती दानों की संख्या काफी बड़ी है लेकिन सीमित साधनों के कारण प्रस्तुत पुस्तक में केवल १०१ नुक्ती ही परोसे जा सके है। डा हरिवंशराय बच्चन ने लिखा है कि १०१ के स्थान पर यदि ये दाने १०८ होते तो जप माला की गरिमा पाते। लेकिन यदि प्रकाशन की सुविधा होगी तो एसी कई जप मालाएँ प्रस्तुत कर सकूंगा।

चूरू — गोविन्द अग्रवाल
महाशिव रात्रि वि स २०३४ — लोक संस्कृति शोध संस्थान
मार्च ७, १९७८ ई — नगर-श्री, चूरू

१

माटी कै नान्हें स दीव की आ खिमता है क वो अधार न आपक हेटै दाब कर राखै, पण मिनख क सिर पर तो अग्यान को अधारो हर वगत चढ्यो ई रव ।

The small earthen lamp always subdues darkness under it but the darkness of ignorance always mounts on man s head

मिट्टी के नन्हे से दीपक की यह क्षमता है कि वह अँधेर को अपने नीचे दबाकर रखता है। लेकिन अज्ञान का अँधियारा तो हर समय मनुष्य के सिर पर चढा ही रहता है।

२

लिछमी को वाहरण घुग्घू होव अर वो घणखरी विरिया आपकी धणियाणी न आपकी बिरादरी आळा क घरा ई ले ज्याव ।

Lakshmı, the goddess of wealth, has an owl as her carrier and how frequently ıt takes her to the houses of ıts own kıth and kın !

लक्ष्मी का वाहन उल्लू है और बहुत बार वह अपनी मालकिन को अपनी बिरादरी वालों के घर ही ले जाता है ।

३

आज क भ्रिष्टाचारी मिनख स्यू तो अडवो चोखो, जिको एक टांग स्यू ऊभो रात दिन परायो खत रुखाळै अर कदेई एक दाणा खावण की मनस्या कोनी कर ।

A scare-crow is often better than man Standing on its wooden leg it guards the field day and night without asking for a grain

आज क भ्रष्टाचारी मनुष्य से तो 'अडवा' कही अच्छा है, जो एक पर केवल खडा रह कर रात दिन पराय खेत की रखवाली करता है और स्वय कभी अन्न क एक दाने की भी आकाक्षा नही रखता ।

४

सूरज दिन उगे आव जद तो वीक चर ऊपर लाली छायाडी रव पण ई दुनिया क मिनखा का किरतब देख कर बाको मूडो धोळो फक हो ज्याव ।

When the day breaks the sun comes with a glowing red face but seeing the misdeeds of this earth's populace its face becomes ashen white

प्रात काल जब सूर्य आता है, तब तो उसका चेहरा लालिमा से दीप्त रहता है लेकिन इस धरती के मनुष्यों के करतब देखकर शीघ्र ही सफेद पड़ जाता है ।

५

सूरज अर तारा की अपेच्छा चाद ई धरती क मिनख क घणा नडो रव, ई खातर वीक अतस म काळूस हाव तो के बडी बात है ?

What is the wonder in the moon having black spots in its heart since it is closer to the man of this earth than the sun and the stars

सूप व तारा की अपेक्षा चाद इस धरती के मनुष्य के निकट ससग म रहता है अत उसके अन्तर म कलुष का होना कोई अनहोनी बात नही है ।

६

चून भाठ का दो रट्टा मार सार ऊचा उठाया जाव तो व आपसरी मे एक दूज न मजबूती दव पण दो पाडोसी साग-साग ऊचा उठ तो व ईरपा स्यू एक दूसर न तळ पटकण की चष्टा कर।

Two walls of brick and mortar built side by side give strength to each other But when two neighbours prosper at the same time both of them think of flooring the other out of sheer envy

सटाकर ऊची उठाई जान वाली गार पत्थर की दो दीवार भी एक दूसरी को मजबूती देती है। लकिन दो पडोसी जब साथ-साथ ऊचे उठत हैं तो व ईर्ष्यावश एक-दूसर का धराशायी करन की चेष्टा करत हैं।

७

आभा इत्ता लाबो-चौड़ो ह क वींको काई छेह कोनी, पण सूम इस्या 'क वो आज ताई एक भी पखेरू न घुरसाळो घालण न एक बिलाद ठाइ कानी दई। बिच्यारा पछी रोजीना दिन की उगाळी वींक दुवार जावै अर आथण-वळा चू चाट करता रीता ही पाछा आ ज्याव।

The sky is big and limitless but totally incapable of offering an inch for shelter and a nest to birds who knock at its door every dawn and return disappointed every dusk

आकाश अनन्त है उसका कोई ओर-छोर नहीं, किन्तु कृपण एसा कि उसने आज तक किसी पक्षी को घासला बनाने के लिए बित्ता भर जगह भी नहा दी। बेचारे पछी हर सवेरे उसक द्वार पर जाते हैं और सध्या को चू-चू करत निराश ही लौट आन है।

८

बादळ एक छरण बीजळी री पळकी देकर इत्ती जोर स्यू गाज क काना रा पड्न फाट्ज्या पण सूरज आद काळ स्यू दुनिया न परगास देवतो आयो है अर वा कदे आज ताई जबान ही कोनी खाली ।

A flash of lightning makes clouds thunder so loud that it may break eardrums but ever since the creation of the universe the sun has been giving light without making a noise

बादल क्षण भर के लिए बिजली की चमक देकर इतने जोरो स गरजता है कि काना के परदे फट जाएँ लकिन सूय सृष्टि के आदिकाल से ससार को प्रकाश देता आ रहा है और फिर भी वह मौन है ।

६

भाठ न आग म बाळ कर कळी त्यार करी जाव अर बो कळी ने जद पाणी म गर तो वा यू सोचकर फूली कोनी मावै 'क अब वा कैंई भीत की काळूस मटण म काम आसी।

Stone becomes lime after being burnt and when it hisses in the water, it swells thinking that now it would be able to hide the dark spots of a wall

पत्थर को आग म फूक कर कलई तैयार की जाती है और जब उस कलई को पानी म डाला जाता है तो वह यह सोचकर फूली नहीं समाता कि अब वह किसी दीवार की कालिमा को ढाँप सकेगी।

१०

जिका आळो दाव न सारो न्वै अर हवा क फटकार स्यू वं
बचाव कर दीवा वीक ऊपर ही काळूस पोन ।

The carved cavity in the wall that shelters an eartl
lamp and protects it from wind always gets blackened by

जो आला दीपक को सहारा देता एव हवा क झोंक से उस
रक्षा करता है, दीपक उसी पर कालिख पातता है ।

११

मीडक न पाणी र्यू भरघाडा एक चुबळियो लाघज्या तो वो टर-टर करतो ग्रोसाए कोनी नव पए मछली ग्रथाग रतनागर-सागर मे रह कर भी बोलवाली ई रव ।

A frog lying in the tiny pool of water never stops twittering but a fish living in a wide ocean remains silent

मेन्क को पानी स भरा एक गड्डा मिल जाता है तो वह टर्राने म नही ग्रघाता लेकिन मछली ग्रगाध रत्नाकर मे रह कर भी चुप ही रहती है ।

१२

बादळ नान्हो होता थका भी तिस मर्ती रोही न पाणी अर तावड स्यू तपत बटोही न छाया देव पण आभो इत्तो वडो होकर भी न तो तिस मरती रोही न पाणी की एक छाट दव अर न तावड स्यू तपत बटोही न छाया ।

The cloud though small always drenches the parched earth and gives cool shade to the weary traveller but the sky though so enormous never behaves like a cloud

बादल छोटा होने पर भी तपित जगल को पानी और घाम स सतप्त पथिक को साया देता है लेकिन आकाश असीम होकर भी न तो तपित वन को पानी की एक बूद दता है और न घाम से याकुल बटोही को साया ।

१३

आद-काळ स्यू ई अनेकूनेक नदियां समदर में इमरत जिस्यो मीठो जळ बयाक ओजती आइ है, पण बींकै काळज की खरास तो आज ताईं चिनक सी भी कमती कोनी होई ।

Since time immemorial, rivers have been depositing their sweet water in the ocean but the sourness of its heart has not diminished a bit

अनेकानेक नदियां आदिकाल से ही अमृत जस मीठे जल की अपरिमित राशि समुद्र में उड़ेलती आ रही हैं, लेकिन आज तक उसके कलेजे का कड़ुआपन तो ज़रा भी कम नहीं हुआ ।

१४

जिकां न बोलण की कळा आ-याव, व जीभ की तरिया बिना मनत करयाँई सारा सुवाद लव पण जिकां न बालण की अटकळ नी आव, वै सदा दांतां की तरिया कोर-काकड इ घसता-पचता रव।

Those who have mastered the art of speech, enjoy all tastes without any exercise like tongue but those who have not, clutter invain like teeth

बोलने की कला म निपुण "यक्ति जिह्वा की तरह बिना श्रम किये ही सारे स्वाद लेते रहते हैं लकिन जि ह एसी दक्षता प्राप्त नहीं होती वे दातों की तरह सदा घिसते रहने पर भी कोरे के कोरे ही रह जाते हैं।

१५

गार भाठ को कोट खड्यो करण म बरसा का बरस लाग अर वीन चिनेक सी ताळ म मटियामेट करचो जा सक है पण ईरषा को कोट छिन म खड्यो हो ज्याव अर वीनै ढाहण म जुग बीत ज्यावै ।

A castle erected with stone and mortar takes years to build, but moments to demolish But a structure of jealousy erected in moments takes ages to demolish

गारे और पत्थर स किले का निर्माण करने मे बडा समय लगता है, किन्तु उसे क्षण म धराशायी किया जा सकता है। इसके विपरीत ईर्ष्या का किला क्षण म खडा हो जाता है जिसे ढहान म युग बीत जाते हैं।

१६

भगवान आपणो अडदली कोनी जिको टाली हलावताई आ हाजर होव ।

God is not the office boy who should attend to us at the ring of the bell

ईश्वर हमारा अरदली नही है जो घटी की आवाज के साथ ही हमारे सामने आकर खडा हो जाए ।

१७

श्रा कश्रत है 'क जोक कै काळजा कोनी हावै। बात साची ही लाग, क्यू क जदि बींक काळजो हावता नो वा मिनख को खून कोनी चूसतो।

Expect not a heart from a leech If it had any, it would not have sucked human blood

कहा जाता है कि जोक के हृदय नहीं होता। इस कथन मे सच्चाई भी हो सकती है क्योंकि यदि वह हृदयहीन नहीं होती तो क्या मनुष्य का रक्त चूसती ?

१८

मालदार बणन की कळपना ही आदमी की नींद ओचटा देव तो पछ मालदार बण कर वो सुख की नींद किया सोण सक है ?

Even the concept of becoming rich does not allow sound sleep Then how it is possible for him to sleep peacefully after getting rich !

मालदार बन जाने की कल्पना ही जब मनुष्य की नींद हराम कर देती है तब भला मालदार बन कर वह सुख की नींद कैसे सो सकता है ?

१९

अन्धार-पख रो चदरमा कळवारी मावसी कने रवण ग्राळ टाबर री ज्यू नितरी घुळतो ई जाव ।

The moon of the dark fortnight becomes weaker and weaker day by day, like a child living with a quarrelsome step mother

कृष्णपक्ष का चाद कलहारी सौतेली मा के पास रहने वाले बालक की तरह नित्य प्रति दुबला होता ही जाता है ।

२०

मदर मे झझ्या-सबेर दो वगत टाली हलावणिय पुजारी को या गुमान भूठो ई है क बो ठाकुरजी क घणो नडो है।

The vanity of the priest that he is nearer to God because he tolls the temple bell twice a day is just fictitious

मदिर मे साभ-सवर दो वक्त टाली बजाने वाल पुजारी का इस बात के लिए गर्वाना व्यथ ही है कि वह भगवान् क बहुत नजदीक है।

२१

च्यानरण-पख की दूज को चाद सुदिया ही सोग्यो ग्रर छाटै क्त की मवली नार की ज्यू रातडली दिन ऊगे नाई निसासा ई मारती रैई।

The moon of the second day of a bright fort night sets early and the night sighs deeply till day break, like the bloo ming wife of a child husband

शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चांद जल्दी ही सोगया और रात्रि लघु-वय वाल पति की नवाढा पत्नी की तरह प्रात काल होने तक उसासें ही भरती रही।

२२

भाग्व फाट ही क रात न विदाई देवता आभ को काळजो फाट हो या कुण जाणैं ?

Who knows when the morning breaks that it is not the heart of the sky which is on the breaking point bidding adieu to its beloved the night

पो फट रही थी या रात्रि को बिदाई देते हुए आकाश का कलेजा फट रहा था यह कौन जाने ?

२३

म्राभ को काळजो फाटग्यो कुदरत वींन रफू तो करया, पण वा रफूगरी ग्रकासगगा क रूप में ग्रळगी ही दीख ।

Nature mended the torn heart of the sky but the mending is still seen as a path in the shape of the milky way

म्राकाश का कलेजा फट गया, प्रकृति ने उस रफू तो किया, लेकिन वह रफूगरी ग्राकाशगगा क रूप म पृथक ही दिखलाई पडती है ।

२४

रातडली क रूप न निरखण खातर आभ क रू रू म तारां क मिस अणगिणत आंख्या खुयाव ।

To adore the beauty of the night fairy the sky winks through the unnumbered stars

रात्रि के सौंदय को निरखने क लिए आकाश के रोम रोम म तारो के मिस असख्य आखें खुल आती हैं ।

२५

सावण की राता म चिमकता जुगनू यू लाग, जाण बिजागण गोरडिया का नण पान्या लगाया आपक प्रेमिया न ढूढता उट रया होव ।

During the night of Shrawan the glow worms look as if the eyes of the beloveds in separation have grown wings and are searching their lovers every where

सावन की रातो म चमकील जुगनुओ को उडत देख कर एसा आभास होता है, मानो वियोगिनी कामिनियो क नेत्रो को पख लग गय हो और व अपने प्रेमियो की खोज म यत्र तत्र उडते फिर रह हो ।

२६

सूरज आपरै तेज स्यूं जोरावर नदियां की धारावां नै तो सुखा देवै, पण एक बिजोगण कै ढळकता आंसुवां नै कोनी सुखा सकै।

The sun can dry the fast flowing rivers by its heat, but it can not even wipe the tears of a separated beloved

सूर्य अपने तेज द्वारा तीव्र गति से बहने वाली नदियों की धाराओं को तो सुखा सकता है, लेकिन एक वियोगिनी की आंखों से ढलकते हुए आंसुओं को सुखा पाने में असमर्थ ही रहता है।

२७

रूपाळी सझ्या न देख कर जद श्राभ कै मन मे काळूस श्रावण लाग तो तारा कै रूप में वीं पर श्रागळिया उठण लाग ज्यावै ।

With the emergence of evening beauty when the hideous darkness spreads in the sky stars come out as pointing fingers

सध्या सुदरी को देख कर जब श्राकाश के मन म कलुष व्यापने लगता है तो तारो के रूप में उस पर उँगलियां उठने लगती हैं ।

३०

घर क आगै जियां जिया उकरडो ऊचो उठतो जाव वियां वियां घर नीच दबतो जावै जियां जियां मिनख को अहकार ऊचो आवतो जाव वींको मिनखाचारो नीच दबतो जाव ।

The garbage heap rising infront of a house surpres ses its facade Likewise the mounting ego of a man surpresses his sense of humanity

घर के आगे जसे जस घूरा ऊचा उठता आता है वसे-वस घर नीचे दबता जाता है जसे जसे मनुष्य की अहकृति ऊची उठती जाती है, उसकी मनुष्यता नीचे दबती जाती है ।

३१

सरद रितु म जद बादळ बूढो हो ज्याव तो वीक मन म न तो संगर की बिरती रव न ईरपा की काळूस रव ग्रर न ही लाक दिखाव की बीजळी रूपी लुक उपन पण म सारी बाता, ई धरती क बूढळा पर लागू कोनी पड ।

The cloud of autumn gets free from the passion of possessions the scartches of envy and the temptation of worldly publicity but this does not apply to the olds of earth

शरत्ऋतु म जब बादल बूढा हो जाता है, तब न तो उसके मन म सग्रह की प्रवत्ति रहती है न ईर्ष्या की कालिमा और न ही लोक प्रदर्शन की बिजली रूपी आग लेकिन य सब बातें इस धरती के वद्ध लोगों पर लागू नही होती ।

३२

भार ढाण आळा ज्यानवर वा बोभो भी कई टम तो बोकी पीठ ऊपर स्यू उतारयो जाव पण एक कुभारज्या आपक धणी की छाती ऊपर पड्यो इस्यो बाभ होव जिका सोवता जागता खावता पीवतां, कदेई कोनी ऊतरै ।

Load carrying animals do get relief some times when they are unloaded but a bad wife is such a burden that the husband never feels happy— sleeping or awake, eating or drinking

भारवाही पशु का बोझ भी किसी समय तो उसकी पीठ पर स उतारा ही जाता है लकिन एक कुभार्या अपने पति की छाती पर पडा एक ऐसा बोझ होता ह जो सोने जागने खाने पीत कभी उसकी छाती पर से नही उतर पाता ।

३३

ग्रादमा की तो बात ही के है, कपड की निरजीव योळी में रिपिया भरण स्यू वा भी मरोड की मारी मरडी लट्ठ हो ज्यावै।

Not to speak of a man, even the inanimate cloth purse becomes stiff and hard when full of money

मनुष्य का तो कहना ही क्या है, कपडे से बनी निर्जीव थोळी में रुपये भर देने पर वह भी ऐंठ कर सख्त बन जाती है।

३४

इत्तै बड अकास को एक छत्तर राजा होकर भी सूरज सदा ईरषा स्यू जळतो-बळतो ई रवै।

Though the sun is the unchallenged monarch of the wide sky it is always burning with envy

अनत आकाश का एक छत्र सम्राट होकर भी सूय ईर्ष्या वश सदा सतप्त ही रहता है।

३५

आ बात सुण राखी ही 'क अंगूर की वेल की जड मे खाद क रूप में खून भी दियो जाव है। बात जची कोनी ही, पण फेरू सोच्यो 'क अंगूर अमीरा को खाज है, सो अंगूर की वल कै खून चूसण की बात साची भी हो सक है।

There could be truth in saying that grape-creepers require blood as manure because after all they are a must in a rich man's diet

ऐसा सुन रखा था कि अंगूर की बेल की जड में खाद के रूप में खून भी दिया जाता है। बात जमी नही थी, लेकिन फिर ख्याल आया कि चूंकि अंगूर अमीरों का खाद्य है, अत इसकी बेल द्वारा रक्त चूसे जाने की बात म सच्चाई भी हो सकती है।

३६

एक कसाई कदेई गऊ की राभ अर बीक फुटराप पर कोनी रीझ कोन ई बात स्यू भी कोइ परोजन कोनी 'क गऊ दूध कित्तोक देव बीकी निजर तो एक ही बात म रव 'क ईस्यू मास कित्ताक मिलसी।

A butcher neither loses his heart over the beauty and sweet bellow of the cow, nor does he measure its milk yield His only consideration is the amount of meat he will derive out of it

एक कसाई न तो गाय के रंभाने पर और न हीं उसकी सुदरता पर रीझता है। उसे इस बात से भी कोई प्रयोजन नही कि गाय दूध कितना देती है उसकी दिलचस्पी केवल इस बात म होती है कि उस गाय से उसे मांस कितना प्राप्त हो सकता है।

३७

ओछा अर नीचो बादळ ई चांद, सूरज अर तारां न ढकण की चेसटा कर, ऊचो अर असीव अवास सगळां न चिमकण को मौको देवै ।

The low and vain cloud tries to coverup the sun, the moon and the stars whereas the high and limitless sky allows them to shine with full glory

क्षुद्र व नीचा बादल ही चांद, सूरज व तारो को ढकने की चेष्टा करता है। लेकिन ऊचा और अनन्त आकाश उन सबको चमकने का अवसर देता है।

३८

ग्यान की तळसीरां ताईं पूगणो घणो करडो काम है, पण पूग कर भी बी ग्यान स्यूं दूजां न लाभ पूंचावणो तो और भी करडो है।

Hard it is to fathom knowledge and still harder it is to dig its pearls and distribute them to others

ज्ञान की तह तक पहुँच पाना बहुत कठिन है किन्तु उस प्राप्त ज्ञान से दूसरों को लाभ पहुँचा पाना तो दुष्कर ही है।

३९

भगवान बिसणु न किरपण कै ऊपर इत्तो घणा भरोसा होव 'क व आपकी घरआळी घणा प्यारा लिछमा न भी वींन ही सूंप अर किरपण भी वीकी जी ज्यान स्यूं रखोप कर, वो वीन इत्ती ल्हुका छिपा कर राख 'क चान्द-सूरज भी नी दखण सक।

Lord Vishnu has so much faith in a miser that he allows his beloved Lakshmi to stay in a miser s house and the miser protects her with his life He does not show her even to the sun and the moon

भगवान् विष्णु को एक कृपण पर इतना अधिक भरोसा होता है कि वे अपनी प्रिय पत्नी लक्ष्मी की रखवाली की जिम्मेदारी भी उस ही सौंप दते हैं और कृपण भी जी जान स उसकी रक्षा करता है। वह उस अपने घर में इस प्रकार से छुपा कर रखता है कि चाद-सूरज भी नहीं देख पात।

४०

दारु पीवण आळां की दसा दारू की तू बी की तरिया होव जिकी एक छण आग उछाळ कर ठंडी अर थोथी हो ज्याव।

Drunkards behave like fireworks First they bubble in heat and fret and then they become cold and lifeless

शराब पीने वाला की दशा आतिशबाजी की 'तूबी' की तरह होती है जो क्षण भर के लिए आग उछाल कर ठंडी और खोखली हो जाती है।

४१

तावड स्यू तप्योडो बटोही बिरछ क नीच आकर बैठ्यो। बिरछ की सीळ सुभाव की घर आळी छाया वीन घणो बिसराम दियो, उठ कर जावती बिरियां बटोही कै मन म आई 'क बिरछ की ई घर आळी न भी साग इ ले चालू ।

A tired traveller scorched by heat sits under a tree The shadow the wife of the tree gives the traveller cool shade and comfort Lo ! The walking traveller would like to carry her away with him

घाम से त्रस्त पथिक वृक्ष के नीचे आकर बैठा तो वृक्ष की शीतल स्वभाव वाली पत्नी साया ने उसे यथेष्ट विश्राम दिया। लेकिन वहां से उठ कर चलते समय पथिक के मन म यह लालसा जगी कि क्यो न वृक्ष की इस घरवाली को भी अपने साथ ही ले चलू !

४२

मुतलबी यार परछाई की ज्यूं घणो निसरमो होवै, दाळद्र के अंधार में तो बो आंख स्यूं ही कोनी दीखै, पण माया को परगास होवताईं झट आ चिपै।

A selfish friend behaves no better than the shameless shadow to be seen no where in the darkness of poverty but clinging fast in the flash of prosperity

स्वार्थी मित्र परछाई की तरह बडा निलज्ज होता है। दारिद्र्य के अंधियारे में तो उसके दर्शन भी दुर्लभ होते हैं लेकिन वैभव का प्रकाश होते ही वह झट आ चिपकता है।

४३

सूरज समदर क पाणी माय स्यू तो खरास काढ कर वीनें मीठो बणा देव, पण एक कुटळ क मन स्यू कुटळाई कोनी काढ सकै ।

The sun can sweeten the salty sea water, but it can not drive out the crookedness from the hearts of crooks

सूर्य समुद्र के पानी की कटुता को तो दूर करके उसे स्वच्छ और मीठा बना देता है लेकिन एक कुटिल व्यक्ति के मन की कुटिलता को तो वह भी दूर नही कर पाता ।

४४

पुयू की चाद चादणी के मिस सारी रात खुल हाथां चांदी धरसाव पण फेरू भी वाऊ चर की काळू स कोनी मिट या दग कर वो जावक उदास हो ज्याव ।

The full moon squanders silver shine open handedly the whole night, but she retires morosely seeing black spots on her face still existing

पूर्णिमा का चाद चादनी के मिस रात भर खुले हाथो चांदी लुटाता है, फिर भी उसके मुह की कालिख नही मिटती यह देख कर वह विवर्ण हो जाता है ।

४५

सावणी बिरखा क साग ही पीळ पीळ धोरा ऊपर चालती लाल लाल तीज्या यू लाग, जाण गरमी स्यू दाझ्योडी मरु भोमी की रगा मे नयो खून साचरयायो होव ।

When tiny red velvet moths 'Teej majestically creep over the golden sand hills in the showering month of 'Shravan it appears as if the dried veins of desert have become young with new red blood

सावन की वर्षा क साथ ही बालू के पीले पील टीला पर रेंगती हुई लाल रग की बीरबहूटिया एसी लगती हैं मानो आतप-दग्ध मरु भूमि की नसो म नये रक्त का सचार हो गया हो ।

४६

मोठ मिनख न दाळ्द्र म ग्रधार म तो ग्रागली पाछली सा सूझ, पए माया को च्यानणो होवताई वो घुग्घू की तरिया चूं घ ज्याव ।

A stupid man revels in poverty like an owl who sees in the dark but when the flash of riches come to him he goes astray

हीन व्यक्ति को दारिद्रय के ग्रधकार म तो भला-बुरा सब दिखलाई पडता है लेकिन वभव की चमचमाहट के साथ ही वह उल्लू की तरह चौंधिया जाता है ।

४७

बिरखा की रुत में जद चिउटा दीव की लौ स्यू मिलण बेई घणा बेकरार हो ज्याव तो बाकै पांख्या उग्यावैं। जदि बिजोगी मिनख भी आपकी चहेतिया स्यू मिलण वई इत्ता ही बेताब हो सकता, तो स्यात् भगवान बान भी पांख्या दे दवतो।

In the rainy season ants so keen to embrace their beloved the flame have little wings additionally granted to them Were men so keen to meet their beloveds, they too would have received wings

वर्षा ऋतु मे जब चिउटे दीपक की लौ से मिलने के लिए अत्यंत बचैन हो उठते हैं तो उनके पख निकल आते हैं। यदि वियोगी मनुष्य भी अपनी प्रेमिकाओं से मिलने के लिए इतने ही आतुर हो पाते तो सभवत ईश्वर उन्हें भी पाखें द दता।

४८

रात क अधार में अक्कासगगा इसी लाग जाए दो मा-जाया भाई घर का बँटवारो करक आगए क बीचू बीच भीत खिचाई होव पए ई काम स्यू भीत क अतस म भी सूळा सी चुभरी है अर वा पीडा म डूबी पडी है।

The Milkyway in the dark night looks like the dividing wall between the house of the two real brothers But being deeply grief stricken, it lies in agony pierced in the heart by thorns

रात्रि क अंधेरे म आकाशगगा एसी लगती है मानो दो सहोदर भाइया ने परस्पर घर का बँटवारा करके घर के आंगन के बीचा-बीच दीवार खिचवाई हो। लेकिन इस काय स स्वय दीवार के अतर म भी कांटे से चुभ रहे हैं और वह गहरे विपाद म डूबी पडी है।

माटी को जड खेत भी गोरी-काळी मे भेद-भाव राखै। च्यानण पख की गोरी-उजळी राता न वो जित्ता फळ देवै अंधार-पख की काळी कळूटी रातां न वित्ता कोनी देव ।

The dead field also understands the difference between the dark and fair The yield of fruits on the bright silvery nights of full moon period is far greater than the black dark nights of the other period

जड खेत भी गोरी और काली का अंतर रखता है। शुक्ल पक्ष की गोरी-उजली रातो को वह जिस बहुतायत से फल देता है, कृष्ण-पक्ष की काली-कलूटी रातों को उतना कब देता है ?

५०

समदर लांबो चौडो तो घणो ई होव पण मीठ पाणी र तो एक टोप न भी वी मे जगां कोनी लाध ।

The boundless ocean too has no place even for a drop of sweet water

समुद्र विस्तृत तो खूब होता है, लेकिन मीठे जल की तो एक बूंद के लिए भी उसमे जगह नही होती ।

५१

किरपण आकास आपरै रतनां के खजानै नै रात के अधारै मे चुपकसी खोल । सम्मक रात सगळ हीरै मोत्या न काळजै स्यू चिपाया राख पण सूरज के आवणै स्यू पली-पली वानै पाछा ही ल्हूको लेवै ।

The miserly sky opens its treasure trove during the night and feels immensely pleased to keep its diamonds and pearls near its bosom but conceals them before the advent of the sun

कृपण आकाश अपने रत्न भडार को रात्रि के अधेरे म चुपके स खोलता है। यह रात भर तमाम रत्नों को अपने कलेजे से चिपटाये रखता है, किन्तु सूय क आने से पहले-पहले उन्हें फिर अपने गुप्त खजाने म बद कर लेता है।

५२

माटी को दीवो चिनोक सो उजास देकर भी आपक काजळ स्यू आपकी बिडदावळी भीत ऊपर मांड पण आख जगत न परगास देवणियो सूरज कदे इसी बात मन म ई को ल्याव नी ।

The earthen lamp which gives a little light, blackens the wall with its boast full deeds but the sun which gives light to the entire universe never thinks of it for a moment

मिट्टी का दीपक जरा सा उजाला देकर भी अपने ही काजल से दीवार पर अपनी बिरदावली अंकित करता है। लेकिन अखिल जगत् को प्रकाशित करने वाला भास्कर कभी क्षण भर के लिए भी ऐसी बात नहीं सोचता ।

५३

मालदारा का पग तो माया क नसै स्यू धरती पर टिक कोनी अर गरीब क दो पगा न कठई ठोड कोनी, जद पछ आ धरती कर्या जोगी है ?

What is the value of this earth, when the rich maddened with wealth never place their feet on it and the poor have no place any where for their tottering feet !

माया के नशे में मत्त धनिकों के पैर तो इस धरती पर टिकते नहीं और गरीब के दो परों के लिए कहीं ठौर नहीं, तब भला इस धरती की क्या उपयोगिता है ?

५४

रात को अंधारो अकास का तारा रूपी छिद्र चोड़ कर दिन को परगास वांन ढक देव ।

The darkness of the night brings into focus the hole like stars but the day covers them up by a canopy of its light

रात्रि का अंधेरा आकाश के छिद्रों को तारों के रूप में प्रदर्शित करता है, लेकिन दिन का उदात्त प्रकाश उनको ढक देता है ।

५५

पाणी स्यू भरयोड़ै कुंड मं टिकाणै स्यू सीधी अर निरजीव लक्ड़ी भी बाकी लखावै, जणा माया स्यू भरयोड बखारा कै बिचाळै रवणिया मिनख सीधा क्यिा रैव ?

A straight piece of wood though lifeless, looks curved when placed in a vessel full of water, then how it is possible for man who live in treasure houses, to appear straight ?

सीधी और निर्जीव लक्डी को भी पानी से भरे पात्र मे टिकादें तो वह भी टेढी दिखलाई पडने लगती है तब भला सपत्ति से भरे बखारो' के बीच रहने वाला धनिक सीधा कसे रह सक्ता है ?

५६

आदमी घणी तेज चाल स्यू उडण आळा बिवाण बणा लिया अर वो बित्ती ही तेजी स्यू मिनखाचारै स्यू भी दुर होवतो बग है ।

Man has made fast flying planes no doubt but he has flown away faster from humanity

मनुष्य ने बडी तीव्र गति से उडने वाले विमान बना लिये हैं और वह उतनी ही तेज गति से मनुष्यता से भी दूर भागता जा रहा है ।

५७

अकास रूपी चिडीमार सझ्या की वेळा अधार को जाळ विछायो तो तारा रूपी अणगिणत पखेरू वी मे आ फस्या। पण ऊषा को इसारो पावताई सारा पखेरू वी जाळ न लिया ही उडग्या।

When evening comes the bird hunter sky spreads out its net of darkness and unlimited number of birds in the shape of stars are entangled in it But at the signal of dawn they all flyout taking the net with them

आकाश रूपी बहेलिय ने साध्य वेला मे अधेरे का जाल फलाया तो तारा रूपी असख्य पक्षी उसमे आ फँसे। लेकिन उषा का सकेत पाते ही वे सब के सब उस जाल को लिये दिये ही उड गय।

५८

पापी न तो धरमराज की तै करयोडी म्याद ताईं ही नरक में राख्यो जावै परण कुविच्यारी सदां ही नरक म रव ।

The sinner stays in hell for a definite period as decided by *Dharmaraj* but the man of evil intentions is always doomed to it

पापी को तो धमराज द्वारा निश्चित की गई अवधि तक ही नरक में रखा जाता है लेकिन एक कुविचारी सदैव ही नरक म निवास करता है ।

५६

आभ न सूरज घणा ई तपाव, फेरू भी वो बीन एक काणी कोडी आंख स्यू कोनी दिखाव। पण सझ्या सुदरी की एक मुळक कै सागई वो हीर मोत्यां स्यू भरयोडो आपको खजानो राजी राजी खोल दव।

Sun god beats the sky with all its force yet it is not rewarded even with a punched cowrie But when the fairy evening spreads its be witching smiles the sky discloses its entire treasure of diamonds and pearls without any reserve

सूर्य आकाश को खूब तपाता है फिर भी वह उसे एक कानी कोडी नहीं दिखलाता। लेकिन सध्या सुदरी की एक मुस्कराहट के साथ वह अपना रत्नकोश सहृष खोल देता है।

६२

बिरखा की रुत मे गार अर भाठै की जूनी भीता म ई दराडां पड ज्याव तो फेर बिजोगण गोरडी र काळज को के व्हाल होवतो होसी ?

Even the old walls built of stone and mortar crack in rainy season Just imagine what must be happening in the heart of a separated beloved !

वर्षा ऋतु म जब गारे और पत्थर की जीर्ण दीवारो मे भी दरारें पड जाती हैं तब भला वियोगिनी नवोढा के मन की क्या गति होती होगी ?

६३

जद अणगिणत तारा रूपी मरद रात्यूं रीज कर भी अंधार न कोनी हटाण सक्या, तो ऊषा' सुंदरी वीन हटाणै को बीडो चाब कर रावळै स्यूं बारै नीकळी जीन देखताई अंधारो पग छोड कर भाग खडयो होयो।

When innumerable stars proud of their manly vigour can not dispel darkness after trying for the whole night, then '*Usha*' the beautiful maiden accepts the challenge and the darkness has to fly away for its life

जब असंख्य तारो रूपी मरदो के रात भर पूरा जोर लगाते रहने पर भी अंधेरा टस से मस नहीं हुआ तो उषा सुंदरी उसे हटाने का बीडा चबा कर अंत पुर से बाहर निकली, जिसे देखते ही अंधेरा अपने सिर पर पाँव रख कर भाग खडा हुआ।

६४

ग्यानी मिनख अग्यान क अंधार न तो सदां स्यू ही याऊ बतावता आया है परा अब तो उदजन बम क रूप म बिग्यान की चिमक भी दुनिया न कद ले बठ की ठा कोनी ।

Wise persons always decry the darkness of igno rance But who knows when the light of scientific knowledge of Hydrogen Bomb will destroy the whole world !

ज्ञानी-जन अज्ञान के अंधेर की तो सदैव ही भर्त्सना करते आये है किन्तु कौन जाने कि अब उद्जन बम के रूप म विज्ञान की दमक भी कब इस ससार को रसातल मे पहुँचा दे ।

६५

राजहस की बडाई ई खातर करी जाव है 'क वो दूध अर पाणी न यारा यारा कर दवै पण दो मिल्योडा मे बिजोग करा देणो किस्यो बडाई को काम है ?

King swans are praised because they separate water from milk But what good is it that they separate a unity of two ?

राजहस की प्रशसा इस विशेषता के लिए की जाती है कि वह मिल हुए दूध और पानी को पृथक पृथक कर देता है। लेकिन परस्पर दो घुले मिले हुओ को अलग-अलग कर देना क्या प्रशसा योग्य काम है ?

६६

मिनख ज्यू ज्यू आपरणी निजर स्यू पर होवतो जावै त्यू त्यू छोटो लखावतो जाव पण ज्यू-ज्यू वो ग्रोगण स्यू दूर होवतो बग त्यू-त्यू बडो बणतो जाय ।

Man becomes smaller and smaller when he goes out of our sight But if he discards his vices he becomes greater and still greater

मनुष्य जस जस हमारी दृष्टि स दूर होता जाता है वस वस वह छोटा दिखलाई पडन लगता है लकिन जस जस वह दुगुणा स दूर होता जाता है महान् बनता जाता है ।

६७

रावण, मारीच अर काळनमी दूजा नै ठगण खातर एक एक विरिया भेप बदळया ता भी वान कुमौत मरणो पडचो, ता जिका नित नुवा भेप बदळ है वाकी के गत होसी ?

Ravan Marich and *Kalnemi* died most inglorious deaths, b•cause they disguised themselves once What of the modern man who changes his attire most frequently !

रावण, मारीच और कालनेमि ने दूसरा को ठगने के लिए एक एक बार रूप परिवतन किया तो भी उन्ह बुरी मौत मरना पडा तो जो नित्य नये स्वांग भरते हैं उनकी भला क्या गति होगी ?

६८

समदर कन अणगिणती रतन है अर स्यात् ई खातर ई बीकं अंतस म कदेई न बुभण आळी आग धधकती रव ।

Countless gems abound in the ocean Perhaps it is due to this that an unquenchable fire is always raging deep inside it

समुद्र असख्य रत्न राशियो का स्वामी है और सभवत इसी कारण उसके अतस मे कभी न बुझने वाला बडवानल धधकता रहता है ।

६९

आंख्यां और सारी दुनियां नें तो देखण सक है, पण आपसरी म एक दूसरी न कोनी देख सक।

Eyes see the world around but one eye can not face the other

आंखें शेष सारी दुनिया को तो देख सकती हैं किन्तु परस्पर एक दूसरी को नही देख सकती।

७०

आभ म राच्योडा सुनरी बान्ळ फूटरा तो घणाइ लाग पण वारयू धरती न हरी भरी करण आळी बिरखा कद होव ?

Golden clouds in the sky look very beautiful but they never rain to make the earth luscious green

आकाश म छाये स्वर्णिम बादल सुन्दर तो बहुत लगते हैं लेकिन उनस धरती को हरी भरी बनाने वाली वर्षा कभी नहीं होती ।

७१

एक निरजीव भाठो भी आप स्यूं आप कई क जाकर कोनी लागै, पण ग्यानी कुहाण आळो मिनख आप स्यूं चला कर दूसरां को बुरो बिगाड़ कर।

Even a dead stone will not harm or hurt any body by it self, but a wise man often harms others knowingly

एक जड़ पत्थर भी अपने आप से जाकर किसी को चोट नही पहुँचाता, लेकिन ज्ञानी कहलाने वाला मनुष्य जान-बूझ कर दूसरो को हानि पहुँचाता है।

७२

रात न आभ म भरयोडो घुप अधारो यू लाग, जाण तारां रूपी रतना क खजानै ऊपर काळो नाग गळेडी घाल्या बठ्यो होव ।

The darkness of the night sky looks like a cobra hiding the starlike diamond treasure in its coils

रात्रि के आकाश म छाया हुआ गहन अधियारा ऐसा लगता है मानो तारो रूपी रत्नो के कोश पर काला नाग कुडली लगाये बठा हो ।

७३

जी कन घणी माया होव वीवी तिरसणा घणी बध, घणुँ जळ माळै बादळ म काळूस भी घणी लखाव ।

The man who has wealth enough always desires more just like a cloud The more the water the more black its looks

जिसके पास जितनी ज्यादा सम्पत्ति होती है उसकी तृष्णा उतनी ही अधिक बढ़ती है। अधिक जल वाले बादल मे तृष्णा की कालिमा भी अधिक दिखलाई पडती है।

७४

सरद पुयू क चदरमा की छिब देख कर मदरा म बठ्या धात श्रर पत्थर का दवता भी झूलरा लाग ज्याव ।

Even the stone and metallic idols of temples start swinging when they see the beauty of the full moon night of autumn

शरद पूर्णिमा के चद्रमा की छवि को देख कर मदिरो म बठे धातु और पत्थर के देवता भी झूलने लगते है ।

७५

कोठ का किवाड जड दिया तो कोठँ मे अधारो होग्यो। सारी माख्यां सणफणा उठी अधकार म वांको बी घुटै लाग्यो। वँ सगळी की सगळी किवाडा की चीरां मांय स्यू आवत परगास कानी भागी। मन म विच्यार आयो क मिनख तो अग्यान क अधार माय स्यू निकळण की चेस्टा ई कोनी कर मिनख स्यू तो अ मास्यां ई चोखी जिकी एक छण भी अधारै म वद कोनी रवणी चाव।

What vanity of superiority a man suffers from! Insignificant creatures like flies rush out towards light through crevices when doors and windows of a room are shut, but man drones in the eternal darkness of ignorance

कोठरी के किवाट वद कर दिय तो काठरी में अधेरा हो गया। सारी की सारी मक्खियाँ छटपटा उठी और व किवाडा की दरारा स आत हुए प्रकाश की ओर वतहाशा झपटी। यह देखकर मन म विचार आया कि मनुष्य तो अज्ञान के अधियार से निकलने की चेष्टा ही नही करता, उससे तो य क्षुद्र मक्खियाँ कही अच्छी हैं जो क्षण भर के लिए भी अधेरे म वद होकर नही रहना चाहती।

७८

रातडली आभ की सेज ऊपर अधार की माछरदानी ताण कर सोवं। वीक सरीर की आभा माछरदानी क वेजका माय स्यू छण छण कर धरती पर आव अर ई धरती का मिनख वा वजका न तारा कवै।

The lady night sleeps over her sky bed spreading her mosquito net of darkness The shimmering beauty of her figure glows out throuhg the net holes and men on earth take it to be stars

निशा सुन्दरी आकाश रूपी शय्या पर अधरे की मच्छरदानी तान कर सोती है। उसके शरीर की कान्ति मच्छरदानी के छिद्रा से छन छन कर पृथ्वी पर आती है और इस धरती के लोग उन छिद्रा को तारे कहते हैं।

७९

जोतषी चोथ चदरमा न घातक बताया कर है, सो चोथपण मे जिका मिनख चदा बदनी कामणी न ब्याह कर घर मे ल्या बठाव, वाकी दुरगत देखता आ बात साची ही लाग।

Astrologers predict death and destruction when the moon is set in the fourth house Verily it explains what happens when an old person marries a moon faced damsel of sweet sixteen in the fourth quarter of his life

ज्योतिषी प्राय मनुष्य के लिए चौथे चन्द्रमा को घातक बतलाया करते हैं चौथेपन म जो लोग षोडशी चन्द्रमुखी को विवाह कर घर लाते हैं उनकी दुर्दशा देखते हुए ज्योतिषियों का कथन सत्य ही लगता है।

८०

सावित्री आपक मरयोड धणी सत्यवान रा पिराण भलाइ जमराज पास्यू ओटा ले आई होव पण बीत्योड सम रो एक छण भी आज ताई कोई पाछा कोनी म्हाड सक्यो ।

Savitri could persuade *Yama* the lord of death to restore her dead husband *Satyawan* to life but could one bring back a single moment of time that has passed

सावित्री अपने मत पति सत्यवान के प्राण यमराज के घर से भले ही लौटा लाई हो किन्तु क्या आज तक कोई बीते हुए समय के एक क्षण का भी लौटा पाने म समथ हो सका है ?

८१

भगवान सदासिवजी विषधर काळै नागां नै तो गळै लगाया राखै, पण कुटीचरां स्यूं तो वै भी टाळो ई देवै ।

Lord *Shiva* permits the deadly venomous snakes to girdle his body but he too shuns the company of evil persons

भगवान भूतनाथ भले ही विषधर काले नागों को अपने गले से लिपटाये रखते हों, लेकिन कुटिल जनों से तो वे भी बचकर ही निकलते हैं ।

८२

किरक भाळो मिनख कई क आग हाथ पसारण स्यू पली पग पसारणा चोखा समझ ।

A man of prestige will prefer dying to go abegging

स्वाभिमानी व्यक्ति किसी के आगे हाथ पसारने से पहले पर पसारना अच्छा समझता है ।

८३

कपडै न बुणनिया तो जुलावा का जुलावा ई रया अर वींको बोपार करणियां घना सेठ बणग्या ।

The weavers of cloth have always remained weavers, but those who buy and sell it, have become multimillionaries

कपडे को बुनने वाले तो जुलाहे के जुलाहे ही रहे, लेकिन उसका व्यापार करने वाले घनासेठ बन गय ।

८६

जदि कोई ग्यानी मिनख आपकै ग्यान स्यूं दूजां को भलो नीं करै, तो वो वीं मालदार मूंजी स्यूं भी गयो बीत्यो है जिको दूसरां की भलाई खातर एक दमडी कोनी काढ़ै।

If a wise man does not benefit any body by his good counsel he is worse than a miser who does not spend a single pie to help the needy

यदि ज्ञानवान पुरुष अपने ज्ञान से दूसरा को लाभ नहीं पहुंचाता तो वह उस धनिक सूम से भी गया गुजरा है जो दूसरो की भलाई के लिए एक दमडी भी खर्च नही करता।

८५

नदी क पाणी ऊपर तिरती थका भी ˜याथ वास्यू अलूफ रव पण जद वा पाणी न आपक मांय भेळो करण लाग ज्याव, जद आप तो डूब ही, बी मे बठ्या होव जिका न भी साग ई ल डूब ।

The boat floats over water as long as it remains detached from it but the moment it allows the water to seep in it not only does it sink it self, but also drowns all its occupants

नदी व पानी पर नाव निर्लिप्त भाव से ही तैरती है लकिन जब वह पानी को अपने अ दर भरने लगती है तब वह स्वय तो डूबती ही है, अपने अ दर बठे हुए लोगा को भी साथ ही ले डूबती है ।

८६

हवाईजाजां की नितकी होण आळी दुरघटनावां ई कैवत न साची कर द कीडी की मौत आव जद वीक पाख्यां उग्याव।

Plane accidents which have become a routine makes the proverbial saying 'When death comes to an ant, it gets wings' absolutely true

आये दिन होने वाली वायुयान दुघटनाएँ इस कहावत को चरिताथ कर रही हैं कि जब चींटी की मौत आती है तो उसके पख निकल आते हैं।

८७

बिच्यार चौपायाँ क हाथ कोनी होव, ई खातर वान चरण वेई आपकी नाड नीची करणी पड । पण मिनख न तो रामजी ई खातर ई दो हाथ दिया है 'क वीन आपक खाण खातर आपकी नाड कोई क आगै नीची नी करणी पड ।

Poor animals have no hands Hence they have to hangdown their heads when they eat But God has given two hands to a human being so that he does not need to bow down for any body for his food

बेचार चौपाया के हाथ नही होते इसलिए उन्ह गरदन झुका कर चरना पडता है। लेकिन मनुष्य को तो ईश्वर ने इसीलिए दो हाथ दिय हैं कि उसे अपने खाने के लिए किसी के आग अपनी गरदन न झुकानी पड़े।

८८

जद आपा आपणो खुद नै चरो देखण खातर ई दरपण का मोताज रवा, तो पछ भगवान न बिना साधना क किया देखण सका हा ?

To see our own face we use a mirror Then how can we see God without *sadhana* !

जब हम स्वय अपना मुँह देखन के लिए भी शीशे के मोहताज हैं तब भला परमात्मा को बिना साधना के कस देख सकते हैं ?

८६

जद कोई न यू कवा 'क थारा भाग घणो मोटो है, तो वो राजी होव, पण जद बीन यू कवा 'क थारी अक्कल घणी मोटी है तो वो दोरो मान, भाग अर अक्कल को यो ही आतरो है।

When we tell some body that his luck is very solid, he is much pleased but when we say that his intellect is very fat then he is displeased This is the difference between luck and intellect

जब किसी से कहा जाए कि उसका भाग्य बहुत मोटा है तो वह प्रसन्न होता है, लेकिन जब उससे कहा जाए कि उसकी अक्ल बहुत मोटी है तो वह नाराज होता है, भाग्य और अक्ल म यही ता म-तर है।

६०

समदर का पाणी आपकी सारी खरांस, सारो मलापण अर रतनां को मोह छोडया इ भाप क रूप म ऊंचो उठ सक है।

The water of the ocean rises up to the sky by way of steam when it leaves its sourness dirtiness and attachment to ocean gems

समुद्र का पानी अपना सारा कड़ुआपन मलापन और रत्नों का मोह छोड़ने पर ही वाष्प के रूप में ऊंचा उठ पाता है।

९१

कवळी गार अर करड़ो भाठो मिलकर घर बणावें, कँवळी नार अर तगड़ो मोटयार रळ कर घर वसाव ।

The soft mortar and hard stone go in the making of a house Similarly a soft mellow wife and sturdy husband establish a sweet home

नरम गार और कड़ा पत्थर मिल कर घर का निर्माण करते हैं। मृदु पत्नी और दृढ पति मिल कर उसे बसाते हैं।

६४

सूम को धन समदर क पीद मे पड भाठ की ज्यू हाव, जिको कईं नैं काम कोनी श्राव ।

A misers money is like a worthless stone lying in the bed of an ocean It benefits none

कृपण का धन सागर के तल म पड पत्थर के समान होता है जो किसी के काम नही आता ।

९५

धधक्त लाल खीर क उपर माया रूपी पाणी को एक टोपो पड्यो तो खीर की साधना मे भिजोग पडग्यो। जठ पाणी को टोपो पड्यो, वठ स्यू ही वो काळो स्याह होग्यो।

A drop of water makes a red bright hot coal black A flick of *maya*' does the same to *sadhana*'

धधक्ते हुए लाल अगारे पर मायारूपी जल की बूद क्या गिरी, अगारे की साधना म विघ्न पड गया। जिस स्थान पर बूद गिरी वही पर दमक्ता हुआ लाल अगारा काला सियाह हो गया।

९६

बसत रितु म म्हान बिरछां स्यू अळगा होवणा पड़सी, इ सोच सोच म इ बिरछा का पत्ता पीळा पड लाग्या ।

Leaves turn pale at the thought of separation from trees at the advent of spring

वसंत ऋतु के आगमन के साथ वक्षो के पत्ते यह सोचकर पीले पडने लगे कि अब उन्हे वक्षो से विलग होना पडेगा ।

९७

नदी डूगर स्यू नीकळ, इ खातर वीक वन आवे जिके ई भाठे ने वा आपके पी र को जाण कर काळज म जगा देव ।

A river flows from the hills so any stone that comes in the flow, she keeps near her heart, thinking that it has come from her peternal home

नदी का आविर्भाव पवत से होता है अत उसके पास आन वाले प्रत्येक प्रस्तर को अपने पीहर का जानकर वह उसे अपने कलेजे म स्थान देती है।

६८

बिरखा की सुरंगी रुत म सुहावणी पून चालै मिनख सोरी सास लेव, पण आ बात कुटीचर सैतान न कद सुहाव ? वो झट ई मिनख न दुख देवण आळा भात भात का माछर डास पदा कर देव ।

In the delightful rainy season soothing breezes blow and men breathe relaxingly but the devil envious of this pleasure creates an army of biting and annoying mosquitoes of many varieties

सुरंगी वर्षा ऋतु म सुहावनी हवा चलती है मनुष्य चन की सास लेता है । लेकिन यह बात कुटिल शैतान को सह्य नही होती । वह तत्काल ही मनुष्य को दुख देने वाले तरह तरह के जहरीले मच्छर और डांस उत्पन्न कर देता है ।

६९

पूरणमासी क चदरमा न देखां तो यू लाग, जाणै चदरलोक म धोळा मर काळा एक जी होकर मिलगत स्यू रव । पण ई धरती वा धोळिया मिनख तो काळिया न खाया ई धाप ।

When we see the full moon we seem to think that there is no difference between black and white but when we see the earth it gives us a shock The white tries to devour and annihilate the black

पूर्णिमा क चांद को देखकर प्रफुल्लता होती है कि चन्द्रलोक मे श्वेत और काले बिना किसी भेद भाव के मिल जुल कर साथ साथ रहते हैं। लेकिन इस धरती के श्वेत लोगो को तो काले फूटी आंखो भी नहीं सुहाते।

१००

कोठ का दोनू किंवाड जद आपसरी म मिल तो कोठ म अधारो अर अळगा होयां च्यानणा होव पण दो प्रेमी जद आपसरी म मिल तो दोनुआ का मन सचग्रण हो'या अर बोछड जद घुर अघार स्यू भरज्या।

The room is plunged in darkness when its two doors close together When they are separated engulfs the room But when a loving pair meets their hearts are full of light and when they separate it creates pitch darkness for them

एक कमरे के दो किवाड जब परस्पर मिलते हैं तो कमरे मे अधेरा एव उनक अलग अलग हो जाने पर प्रकाश होता है। इसके विपरीत जब दो प्रेमी परस्पर मिलते हैं तो उनके मन प्रसन्नता के प्रकाश से जगमगा उठते हैं और बिछुडने पर निविड अधकार में डूब जाते हैं।

१०१

एक कीडी पक्की सडक पर बगे ही अर दूजी बाळू रेत ऊपर। जगी बूट परयोड मिनख को एक पग सडक आळी कीडी कै ऊपर पड्यो तो बापडी को कीचरडो नीकळग्यो। पण वोही पग जद बाळू आळी कीडी पर पड्यो तो बाळू मिमता स्यू भरयोडै मा क हिवडै की ज्यू वी कीडी न आपक काळज म लेली अर वीक फूल की छडी ई कोनी आई।

An ant was walking on a surfaced road while the other was going on a sandy track The ant on the road was crushed under the tread of a heavy boot of a traveller but the second one was shelved in the soft and affectionate bosom of sand with the fall of the second step of the traveller

एक चीटी पक्की सडक पर जा रही थी और दूसरी बालू रेत पर। भारी भरकम बूट पहने हुए यात्री का पर सडक वाली चीटी पर पडा तो बचारी का कचूमर निकल गया। लेकिन वही पर जब बालू पर चलने वाली चीटी पर पडा तो ममता भरे मा क हृदय की तरह बालू ने चीटी को अपने म समट लिया और उसका बाल भी बांका नही हो पाया।

आप के द्वारा मुक्त मन से परोसे गये नुकती दाणो का मैंने मुक्त हृदय से छक कर पान किया। धरती प्रकृति से आत्मसात हो कर इसमें आपने जो मनोमुग्धकारी रंगीन रूपक सजोये हैं उन पर मुग्ध हू। इन्हें पढ़ कर खलील जिब्रान की याद हो आती है। हृदय से आप कवि हैं और बुद्धि से निबन्धकार इनमे दोनों का सुन्दर समन्वय हुआ है।

जहाँ धरती की थाली में इन्द्रधनुष की रांगोली और सरोवरो के कलश सजोकर उषा और सध्या जसी रंगीन मिजाज गृहणियो के द्वारा, घर के तेजस्वी स्वामी सूय और शरारती साथी चाँद की उपस्थिति मे ग्रह-नक्षत्र और सितारों के व्यजन परोसे जायें, वहां यदि मन आनद से भर उठे तो इसमें क्या आश्चय !

इनमे कहीं रात्रि का सौंदय निखरने के लिये, आकाश के रोम रोम से सितारों की आखें झाकने लगती हैं तो कहीं आकाशगगा एसी प्रतीत होती है मानो आकाश का कलेजा फट गया हो और प्रकृति ने उसे आकाशगगा के सफेद धागो से रफू कर दिया हो।

इस मे कही सध्या सु दरी को देख कर जब आकाश के मन म कलुष जगता है तो सितारो क रूप म उसकी ओर उठी हुई असख्य अगुलिया की छाप देख सकते हैं तो कही शरद का वह निलिप्त बादल है जिसक मन में बूढे आदमी की तरह न तो सग्रहवृत्ति का लोभ रहा न ईर्ष्या क कालिमा और न लोक प्रदर्शन का गर्जन या चमक धमक।

इसम उस बडप्पन से शिकायत है जो आकाश की तरह अनत होक भी पछी को घोसला बनाने इतनी जगह नहा द पाता और उस दिन क वन्दना की गई है जो ईर्ष्यालु रात्रि के द्वारा उघाडे गय अधेरे क ता रूपी छेदो को अपने प्रकाश स ढकने का काम करते आया है।

यह पुस्तक क्या है इसमे सवेदनशील मन के अनेक रगीन ि संजोय हुए हैं। लोकभाषा राजस्थानी राष्ट्रभाषा हिंदी और अत राष्ट्रीय भाषा अग्रेजी म एक साथ इस प्रस्तुत कर आपने भाषा अ साहित्य की त्रिवेणी म स्नान करने का सुयोग प्रदान किया है।

जिस निष्ठा से आपने इसका सु दर रूप में प्रकाशन किया है व स्तुत्य ही नहीं, अनुकरणीय भी है। इतनी सुन्दर कृति के लिए मेरी हार्दि शुभकामनाएँ स्वीकार कीजिएगा।

साहित्य कुटीर रामनारायण उपाध्या
ब्राह्मणपुरी खण्डवा (म प्र)
दिनांक १३ १२ ७७